द्वितीय अध्याय

सम्बन्धित साहित्य का पुरावलोकन

Regional ... of Education
LIBRARY
Bhopal

अध्याय–द्वितीय

संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन

भूमिका :–

साहित्य का 'पुनरावलोकन' प्रत्येक वैज्ञानिक अनुसंधान की प्रक्रिया में एक महत्वपूर्ण कदम है, साहित्य पुनरावलोकन एक कठिन परिश्रम का कार्य है। प्रत्येक प्रकार के वैज्ञानिक अनुसंधान में चाहे भौतिक विज्ञान के क्षेत्र में हो अथवा सामाजिक विज्ञान के क्षेत्र में हो साहित्य का पुनरावलोकन एक अनिवार्य और प्रारंभिक कदम है। क्षेत्रीय अध्ययनों में जहाँ उपलब्ध उपकरणों तथा नवीन स्वनिर्मित उपकरणों का उपयोग तथा प्रदत्त संकलन का कार्य होता है। समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन अनुसंधान का प्राथमिक आधार तथा अनुसंधान के गुणात्मक स्तर के निर्धारण में एक महत्वपूर्ण कारक है।

साहित्य के पुनरावलोकन के लाभ :–

1. जो अनुसंधान कार्य पहले अन्य अनुसंधानकर्ता द्वारा किया जा चुका है, वह पुनः किया जा सकता है।
2. ज्ञान के क्षेत्र के विस्तार के लिये आवश्यक है कि अनुसंधानकर्ता को यह ज्ञान हो कि ज्ञान की वर्तमान सीमा कहाँ पर है? वर्तमान ज्ञान की जानकारी के पश्चात् ही ज्ञान आगे बढ़ाया जा सकता है।

3. पूर्व साहित्य के पुनरावलोकन से अनुसंधानकर्ता को अपने अनुसंधान के विधान की रचना के संबंध में अर्न्तदृष्टि प्राप्त हो सकती है।
4. पूर्व अनुसंधानों के अध्ययन से अन्य संबंधित नवीन समस्याओं का पता लगता है।
5. सत्यापन करने के लिये कुछ अनुसंधानों को नवीन दशाओं में करने की आवश्यकता होती है।

इस प्रकार साहित्य के पुनरावलोकन का अनुसंधान में बहुत महत्व है। प्रस्तुत समस्या से संबंधित साहित्य का पुनरावलोकन इस प्रकार है।

संबंधित साहित्य :-

शिक्षक प्रभावी भूमिका से सम्बन्धित अध्ययन :-

सिंग और **मोहनजी** (1996) ने नौकरी की चिन्ता और नौकरी का स्तर पर अध्ययन किया। अध्ययन का उददेश्य नौकरी का स्तर और नौकरी की चिन्ता के बीच प्रभावी भूमिका सम्बन्ध का अध्ययन करना है। इसमें 100 मैंनेजर और 100 सुपरवाइजर भिलाई के रिफेक्टोरिश फ्लाट में कार्यरत लोगों पर किया गया।

इस अध्ययन के लिए भूमिका प्रभावी स्केल पारिख और नौकरी चिन्ता स्केल जिस पर भिलाई रिफलेक्टोरिश में कार्यरत 200 कर्मचारियों पर न्यायदर्श लिया गया।

इस अध्ययन के मुख्य परिणाम नकारात्मक पाया गया कि इस अध्ययन ने भूमिका प्रभावी और नौकरी की चिन्ता के बीच नकारात्मक सम्बन्ध पाया गया। कर्मचारियों में मैनेजर को उनके प्रभावी भूमिका की चिन्ता सुपरवाइजर की तुलना में अधिक पाया गया। अतः परिणाम मिला की नौकरी की चिन्ता और नौकरी के स्तर दोनो प्रभावी भूमिका को प्रभावित करता है।

सेवल (2000) ने प्राथमिक विद्यालय के शिक्षकों में प्रभावी भूमिका और बदली प्रवृत्ति का अध्ययन किया। इस अध्ययन के मुख्य उददेश्य निम्नलिखित हैं।

1. प्राथमिक विद्यालय के प्रशिक्षित और अप्रशिक्षित शिक्षकों में प्रभावी भूमिका का अध्ययन करना।
2. इस अध्ययन के लिए भोपाल शहर के 16 प्राथमिक विद्यालयों के 124 शिक्षकों को चुना गया। इस अध्ययन के लिये एम. मुखोपध्याय का बदलती प्रवृत्ति परिसूची और उदय पारीखा का प्रभावी भूमिका स्केल का उपयोग किया।
3. इस अध्ययन का मुख्य निष्कर्ष निम्न हैः-
    * अप्रशिक्षित शिक्षक प्रशिक्षित शिक्षक की तुलना में अधिक प्रभावी थे।

* 40 साल से कम उम्र के शिक्षक की प्रभावी 40 साल से अधिक शिक्षकों से अधिक है।

अरेरा 1988 ने प्रभावी और अप्रभावी शिक्षक का अध्ययन उनके शैक्षिक योग्यता व्यवसाय अंक, नौकरी संतुष्टि सामाजिक आर्थिक और पारिवारिक पृष्ठभूमि, अभिवृत्ति और कुछ समसामायिक शैक्षिक प्रयोग मुददे पर उनके विचार के आधर पर प्रभावीता और अप्रभाविता का अध्ययन किया। उन्होने नौकरी संतुष्टि, नौकरी चलनशीलता, कार्य कारणी प्ररिस्थिति, स्कूल से दूरी वर्तमान कार्य और व्यवसाय के प्रभावी और अप्रभावी शिक्षकों में अंतर करने के लिये अध्ययन किया।

पासी और **शर्मा** तथा अन्य (1982) ने लिंग के आधार पर शिक्षकों की प्रभाविता का अध्ययन किया। इसमें महिला और पुरूष शिक्षकों में उनके शिक्षक प्रभाविता में सार्थक अंतर नही है।

शिक्षक पांचवा सर्वेक्षण अनुसंधन 1988 -19
कोयमबटूर, सिकर, रंगरामन, एस (1839) ने
इस अध्ययन के निम्नलिखित उददेश्य हैं।

1. शिक्षकों ने उनके उच्च और निम्न वेतन और सामंजस्य के बीच सार्थक स्तर पर अंतर ज्ञात करना.।
2. शिक्षकों के उच्च और निम्न वेतन और उनके नौकरी का संतुष्टि के बीच सामंजस्य सार्थक स्तर पर अंतर ज्ञात करना।

3. 37 शिक्षकों को दोनो लिंग के आधार को ही यादृश्चिक विधि द्वारा सम्मलित किया गया इन्हें अलीगढ़, ए.एम.व्ही. अन्य विद्यालय, अहमालि, विद्यालय हरिद्वार से सेलेक्ट किया गया।

इस अध्ययन के लिये दो परिस्थिति ने मुख्य न्यादर्श का संकल किया। शोधकर्ता ने अच्छे शिक्षकों का साक्षात्कार लिया, और अच्छे शिक्षकों के लिये अन्य टेस्ट रही थें आंकड़ों के विश्लेषण के लिये टी परिक्षण मानक विचलन और मध्यमान का उपयोग किया गया। इस अध्ययन के निम्न निष्कर्ष है –

1. पाँच निम्न वेतन शिक्षक जो वर्ग से सम्मानित में जबकि 13 शिक्षकों मे निम्न समायोजन और केवल 1 शिक्षक मे औसत समायोजन दिखाई पड़ा। शिक्षकों में बहुत अच्छा, अच्छा, औसत और निम्न तथा बहुत निम्न समायोजन दिखाई पड़ा।

अग्रवाल एम. (1991) ने प्राथमिक स्तर एवं सेकेण्डरी स्कूल शिक्षकों के एवं सतुष्टि का अध्ययन उनके जाति कार्य स्थल, मातृभाषा के आधार पर किया। पुरूष मे स्नातक प्रशिक्षित शिक्षक महिला शिक्षक अधिक संतुष्ट दिखाई दे रहे थे। आयु ओर वैवाहिक स्थिति का कार्य संतुष्टि में कोई सम्बन्ध नही पाया गया। आर्थिक, राजनैतिक मूल्यों को कार्य संतुष्टि से सम्बन्धित पाया गया।

कलेमेश नायक, जी. सी. (1990) ने पाया कि एम एस यूनीवर्सिटी बडौदा के सतुलिया शिक्षक अपने कार्य से संतुष्ट मे अपनी शिक्षक व्यवसाय के प्रति सकारात्मक भमितृप्ती के कारण।

वैवाहिक स्थिति :-

आयु, अनुभव, लिंग आदि कार्य संतुष्टि के स्तर को प्रभावित नही करती है, समूह लक्ष्य या समूह उददेश्य शिक्षक के कार्य सतृष्टि को मापने का अच्छा पैरामीटर है लिंग, अनुभव और पृष्ठभूमि ये सभी चारो का सम्बंध कार्य संतृहित नही होता है।

राना मोहन बाबू वी. (1972) के मतानुसार कम अनुभवी और शिक्षक के प्रति अनुकूल अभितृप्तमी शिक्षण दक्ष्ज्ञता का सम्बंध उच्च कार्य सतृष्टि से है शिक्षक जो स्कूलों एंव स्वाध्यायी वातावरण में कार्य करते है, इनमे उच्च कार्य संतुष्टि पायी गयी जबकि शिक्षक जो बंद, वातावरण में कार्य करते हैं इनमे कम निम्न कार्य संतुष्टि पायी गयी। कार्य संतुष्टि के स्तर पर शारीरिक स्वास्थ्य जीवन और कार्य में तनलीनता का सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

रामाकृष्णा डी (1930)

रेडडी बी. पी. (1939) ने अपने में पाया कि उच्च योग्यता धारी प्राथमिक शिक्ष मे काम कार्य संतुष्टि थी जबकि युवा शिक्षकों मे कार्य संतुष्टि

का स्तर अधिक था। जो कार्य सम्मेलन और शिक्षण अभितृप्ति के प्रति सकारात्मक सम्बंध दर्शाता है।

सक्सेना एन. (1990) ने मध्यप्रदेश हाई सेकेण्डरी विद्यालय के शिक्षकों लिंग और अन्य स्तरो के आधारपर कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया।

Nikhat Y shaf. Shafeea (2003) ने उच्च और निम्न वेतनधारी शिक्षकों का समायोजन तथा कार्य संतुष्टि का अध्ययन किया। इस अध्ययन के निम्न उददेश्य शिक्षकों का उच्च एवं निम्न वेतनधारी समायोजन सार्थक स्तर पर सम्बंध ज्ञात करना।

शिक्षकों में उच्च एवं निम्न वेतनधारी का कार्य संतुष्टि से सार्थक स्तर पर सम्बंध ज्ञात करना।

अग्रवाल एस. (1988) प्राथमिक विद्यालय के अधिक प्रभावी तथा कम प्रभावी शिक्षकों महिला अध्यात्मियों के कार्य समायोजन तथा उच्च कारकों का अध्ययन करना।

समस्याः–

प्राथमिक स्तर के अधिक प्रभावी और कम प्रभावी महिला कार्यकर्ताओं के कार्य संतुष्टि और सम्बंधित अन्य कारको का अध्ययन किया गया है।

उददेश्यः–

1. प्राथमिक स्तर पर अधिक प्रभावी और कम प्रभावी महिला शिक्षक कार्य संतुष्टि का विश्लेषण करना।
2. अधिक प्रभावी महिला अध्यापिकाओं के समायोजन समस्या तथा सम्बधित कारको की पहचान करना।
3. अप्रभावी महिला अध्यापक के समायोजन तथा उससे सम्बंधित अन्य कारको की पहचान करना।

शोध प्रविधिः–

यह सर्वेक्षण विवराणात्मक पद्वति का है 400 महिला शिक्षकों का चयन बरेली शहर के 44 स्कूलो से किया गया। रेटींग स्कूल शिक्षक प्रभाविता ज्ञात करने के लिए उपयोग किया गया।

मुख्य निष्कर्षः–

प्राथमिक स्तर पर अधिक प्रभावी और कम प्रभावी महिला शिक्षकों मे समायोजन समस्या में सार्थन अंतर था अधिक प्रभावी महिला शिक्षक कम प्रभावी महिला शिक्षक की तुलना में अच्छी तरह समायोजित थी।

अधिक प्रभावी महिला स्तर के समयोजन मे सामाजिक कारक तथा कम प्रभावी महिला शिक्षकों में संवगैगीक कारक अधिक प्रभावी पाये गये।

अप्रसिद्ध अवस्थी विलय 1939 ने प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध शिक्षकों की पर्सनॉल्टी तथा उनका प्रभावी शिक्षण से सम्बंध ज्ञात किया।

समस्याः–

इस अध्ययन का उददेश्य प्रसिद्ध तथा अप्रसिद्ध शिक्षकों का पर्सनॉल्टी तथा उसका सम्बंध प्रभावी शिक्षण से ज्ञात करता है।

उद्‌देश्यः–

1. प्रसिद्ध शिक्षकों के पर्सनॉल्टी का कारक का अध्ययन करना।
2. अप्रसिद्ध शिक्षकों के पर्सनॉल्टी कारक का अध्ययन करना।
3. प्रसिद्ध एवं अप्रसिद्ध शिक्षकों का तुलनात्मक अध्ययन करना।
4. प्रसिद्ध शिक्षक के पर्सनॉल्टी कारको का शिक्षण दक्षता से सम्बंध ज्ञात करना।

शोध प्रविधिः–

यह स्वतंत्र अध्ययन या जिसमें 99 पुरुष तथा महिला अध्यापको का चयन कानपुर (उत्तर प्रदेश) ने इन्टरमीडियेट कालेज से किया गया था। 80 अध्यापकों पुरुष/महिलाओं पर केवल 126 पर्सनॉल्टी कारक तथा वर्मा का 25 रेटींग स्केल का संचालन कियाग या प्रसिद्ध और अप्रसिद्ध अध्यापको का पहचान करने के लिए।

मध्यमान, मानक वितलन, की परीक्षण, सह–सम्बंध का उपयोग आंकड़ो के गणना के लिये किया गया।

मुख्य निष्कर्षः–

शिक्षकों की प्रसिद्धि उनके पर्सनॉल्टी कारकों पर निर्भर करती है जो निम्नानुसार है –

E- (Sobr)

(E)- Cons cientious

(G+) slightly tough maundered

(N+) Etremdy shrewd

(Q1) Slightly experimenting

(Q2) Slightly self sufficient

A Quality's of detachment.

उपसंहार :–

उपरोक्त अध्ययनों का अध्ययन करने से पता चलता है कि शिक्षक प्रभाविता के अध्ययन के क्षेत्र में अधिक शोध कार्य नही हुऐ हैं। विभिन्न स्तरो के विद्यालयों के प्राथमिक शिक्षकों की प्रभाविता का अध्ययन किसी शोधकर्ता द्वारा व्यापक पैमाने पर नही किया है जो भी अध्ययन कार्य हुये हैं वे शिक्षकों के प्रभाविता से प्रत्यक्ष रूप से आधारित नही है।

अतः उपरोक्त शोध को प्रस्तुत शोधकर्ता हेतु आधार बनाया है।